IJAER/November-December 2019/Volume-8/Issue-3 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में चौरी चौरा कांड की प्रासंगिकता

डॉ ममता पांडेय

एसोसिएट प्रोफ़ेसर प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति

फ॰अ॰अ॰ गवर्नमेंट पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज महमूदाबाद सीतापुर

सार

यह अध्ययन चौरी चौरा कांड की घटना का विवरण करता है जो संपूर्ण स्वतंत्रता आंदोलन किसान आंदोलन था । चौरी चौरा में भी किसानों ने आज़ादी के लिए क्रांति का मार्ग अपनाया । इस क्रांति को चौरी चौरा कांड नाम दे दिया गया, हाल ही में चौरी चौरा) कांड के सौ साल पूरे होने के अवसर पर प्रधानमंत्री द्वारा एक डाक टिकट जारी किया गया है।व्याख्या की है

मुख्य शब्द : *स्वतंत्रता , चौरी चौरा कांड*

प्रस्तावना

चौरी चौरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की वह अभूतपूर्व घटना है जिसने आज़ादी के पूरे परिदृश्य को बदल कर रख दिया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 के उपरांत हमें आज़ादी प्राप्त करने में 90 वर्ष का समय लगा लेकिन आज़ादी प्राप्त करने में आखरी आहुति का कार्य चौरा चौरा की क्रांति ने किया स्वतंत्रता संग्राम की पूरी पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि संपूर्ण स्वतंत्रता आंदोलन किसान आंदोलन था । चौरी चौरा में भी किसानों ने आज़ादी के लिए क्रांति का मार्ग अपनाया ।किंतु दुर्भाग्यवश इस क्रांति को जो स्थान भारतीय इतिहास में मिलना चाहिए था वह स्थान नहीं मिला । इसके लिए तत्कालीन कई राजनीतिक कारण रहे। इस क्रांति को चौरी चौरा कांड नाम दे दिया गया, जो इसके साथ न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता है । आज़ादी की लड़ाई में ब्रिटिश सत्ता को नेस्तनाबूद करने वाली इकलौती क्रांति को इतिहास में वह स्थान क्यों नहीं दिया गया इसका जवाब किसी के पास नहीं है, लेकिन अब समय आ गया है कि इस ऐतिहासिक क्रांति को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर सबके समक्ष रखा जाए।

क्योंकि इस क्रांति को 4 फ़रवरी, 2021 को 100 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं और ऐसे में यह प्रासंगिक हो जाता है कि इसके इतिहास के बारे में आम जनसामान्य एवं युवा पीढ़ी को बताया जाए और इसी कड़ी में इसके वास्तविक इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास जारी है । उत्तर प्रदेश सरकार चौरी–चौरा की घटना के सौ साल पूरे होने पर इस शताब्दी समारोह का आयोजन कर रही है. इस मौके पर एक डाक टिकट का भी विमोचन किया जाएगा. यह कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के सभी 75 ज़िलों में आयोजित किया जाएगा. चौरी–चौरा घटना की याद में इस समारोह के अंतर्गत पूरे साल आयोजन होंगे और 4 फरवरी 2022 को इसका समापन होगा. इसके तहत विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाएंगी.

स्वतंत्रता संग्राम में गोरक्षपीठ ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 4 फरवरी 1922 को घटित चौरीचौरा कांड में सीएम योगी आदित्यनाथ के दादा गुरु तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महंत दिग्विजयनाथ का भी नाम आया था।स्वतंत्रता संग्राम में गोरक्षपीठ ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 4 फरवरी 1922 को घटित चौरीचौरा कांड में सीएम योगी आदित्यनाथ के दादा गुरु तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महंत दिग्विजयनाथ का भी नाम आया था। लेकिन शिनाख्त न हो पाने से वह फांसी के फंदे से बच गए थे। स्कूल छोड़कर सत्याग्रह से जुड़ने वाले महंत दिग्विजयनाथ ने चौरीचौरा कांड के बाद गांधी का रास्ता त्याग कर अखिल भारतीय हिन्दू महासभा से जुड़ गए थे।

महात्मा गांधी की अगुआई में आजादी का आंदोलन चरम पर था। इधर, ब्रह्मलीन दिग्वजयनाथ का गोरखनाथ मंदिर में आगमन हो चुका था। वह स्कूली दिनों से ही गांधी से काफी प्रभावित थे। वह शांतिपूर्ण सत्याग्रह के साथ क्रांतिकारी आंदोलन को भी मदद करते थे। उन्होंने क्रांतिकारियों को संरक्षण के साथ ही आर्थिक मदद और अस्त्र–शस्त्र भी मुहैया कराए। चौरीचौरा कांड के करीब साल भर पहले 8 फरवरी 1921 को जब गांधीजी पहली बार गोरखपुर आए थे। उस समय दिग्विजय नाथ रेलवे स्टेशन पर उनके स्वागत और सभा स्थल पर व्यवस्था के लिए अपनी टोली स्वयं सेवक दल के साथ मौजूद रहे। दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास विभाग के प्रोफेसर डॉ. रजवंत राव भी इसकी तस्दीक करते हैं। इसके बाद 4 फरवरी 1922 को चौरीचौरा कांड हुआ तो उनका भी नाम आया पर वह बच गए। प्रो.राव कहते हैं कि समकालीन लोगों से पता चलता है कि चौरीचौरा कांड में उनकी सक्रिय भागीदारी थी लेकिन साक्ष्य के अभाव में गिरफ्तारी नहीं हुई थी।

हाल ही में चौरी चौरा) कांड के सौ साल पूरे होने के अवसर पर प्रधानमंत्री द्वारा एक डाक टिकट जारी किया गया है। एक बार असहयोग आंदोलन समाप्त हो जाने के बाद, गांधीजी के अनुयायियों ने जोर देकर कहा कि कांग्रेस को ग्रामीण क्षेत्रों में रचनात्मक कार्य करना चाहिए। चित्तरंजन दास और मोतीलाल नेहरू जैसे अन्य नेताओं ने तर्क दिया कि पार्टी को परिषदों के चुनाव लड़ना चाहिए और सरकारी नीतियों को प्रभावित करने के लिए उनमें प्रवेश करना चाहिए। 1920 के दशक के मध्य में गांवों में ईमानदारी से सामाजिक कार्यों के माध्यम से, गांधीवादी अपना समर्थन आधार बढ़ाने में सक्षम थे।

यह 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने में बहुत उपयोगी साबित हुआ। 1920 के दशक के मध्य में दो महत्वपूर्ण घटनाक्रम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस), एक हिंदू संगठन और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन था। भारत को किस तरह का देश होना चाहिए, इस बारे में इन पार्टियों के बहुत अलग विचार हैं। अपने शिक्षक की सहायता से उनके विचारों के बारे में पता करें। क्रांतिकारी राष्ट्रवादी भगत सिंह भी इस काल में सक्रिय थे 1929 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज (पूर्ण स्वतंत्रता) के लिए लड़ने के संकल्प के साथ दशक का समापन किया। नतीजतन, पूरे देश में 26 जनवरी 1930 को "स्वतंत्रता दिवस" मनाया गया।

उद्देशय

1. चौरी चौरा कांड पर अध्ययन करना।
2. महात्मा गांधी की प्रतिक्रिया पर अध्ययन करना।

चौरी चौरा कांड

चौरी चौरा कांड 4 फ़रवरी 1922 ईस्वी को हुआ था, दरअसल महात्मा गाँधी ने भारत को अंग्रेजों से आजाद दिलाने के लिए कई आन्दोलन किये उनमे एक एक आन्दोलन असहयोग आन्दोलन था, जो महात्मा गाँधी जी के द्वारा 1 अगस्त, 1920 में शुरू किया गया था इस असहयोग आन्दोलन के तहत महात्मा गाँधी ने भारतीय को अंग्रेजी वस्तुओं, सेवाओं और व्यवस्थाओं का बहिष्कार करने को कहा गया था और एक मजबूत आन्दोलन में से एक था 4 फ़रवरी 1922 को जब असहयोग आन्दोलन करने वाले आन्दोलनकारी ने अंग्रेजों की पुलिस के साथ भीड़ गया तो इस घटना को चौरी चौरा कांड या घटना का नाम दिया गया, क्योंकि आन्दोलन कारी और पुलिस की भिरंत जिस जगह में हुआ था वह गोरखपुर दो संयुक्त गाँव था जिसमे एक गांव का नाम चौरी तथा दूसरी गाँव का नाम चौरा था इसीलिए इस घटना का नाम चौरी चौरा कांड पड़ा।

इस घटना के तुरन्त बाद गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन को समाप्त करने की घोषणा कर दी। बहुत से लोगों को गांधीजी का यह निर्णय उचित नहीं लगा। विशेषकर क्रांतिकारियों ने इसका प्रत्यक्ष या परोक्ष विरोध किया। 1922 की गया कांग्रेस में प्रेमकृष्ण खन्ना व उनके साथियों ने रामप्रसाद बिस्मिल के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाकर गांधीजी का विरोध किया। चौरी–चौरा कांड के अभियुक्तों का मुकदमा पंडित मदन मोहन मालवीय ने लड़ा और अधिकांश को बचा ले जाना उनकी एक बड़ी सफलता थी। इनमें से 151 लोग फांसी की सजा से बच गये। बाकी 19 लोगों को 2 से 11 जुलाई, 1923 के दौरान फांसी दे दी गई।

इस घटना में 14 लोगों को आजीवन कैद और 10 लोगों को आठ वर्ष सश्रम कारावास की सजा हुई।अंग्रेज सरकार ने मारे गए पुलिसवालों की याद में एक स्मारक का निर्माण किया था, जिस पर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जय हिन्द और जोड़ दिया गया।स्थानीय लोग उन 19 लोगों को नहीं भूले जिन्हें मुकदमे के बाद फाँसी दे दी गयी थी। 1971 में उन्होने 'शहीद स्मारक समिति' का निर्माण किया। 1976 में समिति ने झील के पास 12.2 मीटर ऊँची एक त्रिकोणीय मिनार निर्मित की जिसके तीनों फलकों पर गले में फाँसी का फन्दा चित्रित किया गया। बाद में सरकार ने उन शहीदों की स्मृति में एक स्मारक बनवाया। इस स्मारक पर उन लोगों के नाम खुदे हुए हैं जिन्हें फाँसी दी गयी थी (विक्रम, दुदही, भगवान, अब्दुल्ला, काली चरण, लाल मुहम्मद, लौटी, मादेव, मेघू अली, नजर अली, रघुवीर, रामलगन, रामरूप, रूदाली, सहदेव, मोहन, संपत, श्याम सुंदर और सीताराम)।

इस स्मारक के पास ही स्वतंत्रता संग्राम से सम्बन्धित एक पुस्तकालय और संग्रहालय भी बनाया गया है। क्रांतिकारियों के याद में कानपुर से गोरखपुर के मध्य में 'चौरी–चौरा एक्सप्रेस' नामक एक रेलगाड़ी चलाई गई। चौरी चौरा कस्बे में 4 फरवरी को स्वयंसेवकों ने बैठक की और जुलूस निकालने के लिये पास के मुंडेरा बाज़ार को चुना गया। पुलिसकर्मियों ने उन्हें जुलूस निकालने से रोकने का प्रयास किया। इसी दौरान पुलिस और स्वयंसेवकों के बीच झड़प हो गई। पुलिस ने भीड़ पर गोली चला दी, जिसमें कुछ लोग मारे और कई घायल हो गए। गुस्साई भीड़ ने एक पुलिस स्टेशन में आग लगा दी, जिसमें 23 पुलिसकर्मी मारे गए। कुछ भागने की कोशिश कर रहे पुलिसकर्मियों को पीट–पीटकर मार डाला गया। हथियारों सहित पुलिस की काफी सारी संपत्ति नष्ट कर दी गई।

असहयोग आंदोलन की शुरुआत

गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ 1 अगस्त, 1920 को असहयोग आंदोलन शुरू किया था। इस आंदोलन के तहत गांधीजी ने उन सभी वस्तुओं (विशेष रूप से मशीन से बने कपड़े), संस्थाओं और व्यवस्थाओं का बहिष्कार करने का फैसला लिया था जिसके तहत अंग्रेज़ भारतीयों पर शासन कर रहे थे। वर्ष 1921–22 की सर्दियों में कॉन्ग्रेस के स्वयंसेवकों और खिलाफत आंदोलन (Khilafat Movement) के कार्यकर्त्ताओं को एक राष्ट्रीय स्वयंसेवक वाहिनी के रूप में संगठित किया गया।प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् मुसलमानों के धार्मिक स्थलों पर खलीफा के प्रभुत्व को पुनर्स्थापित करने तथा प्रदेशों की पुनर्व्यवस्था कर खलीफा को अधिक भू–क्षेत्र प्रदान करने के उद्देश्य से भारत में मोहम्मद अली, शौकत अली, मौलाना आज़ाद जैसे नेताओं ने खिलाफत कमेटी (1919 ई.) का गठन कर देशव्यापी आंदोलन की नींव रखी।कॉन्ग्रेस ने इस आंदोलन का समर्थन किया और महात्मा गांधी के प्रयास से इसे असहयोग आंदोलन में मिला दिया गया।

अंग्रेज़ों की प्रतिक्रिया:

ब्रिटिश राज ने अभियुक्तों पर आक्रामक तरीके से मुकदमा चलाया। सत्र अदालत ने 225 अभियुक्तों में से 172 को मौत की सज़ा सुनाई। हालाँकि अंततः दोषी ठहराए गए लोगों में से केवल 19 को फाँसी दी गई थी।

महात्मा गांधी की प्रतिक्रिया:

गांधीजी ने पुलिसकर्मियों की हत्या की निंदा की और आस–पास के गाँवों में स्वयंसेवक समूहों को भंग कर दिया गया। इस घटना पर सहानुभूति जताने तथा प्रायश्चित करने के लिये एक 'चौरी चौरा सहायता कोष' स्थापित किया गया था। गांधीजी ने असहयोग आंदोलन में हिंसा का प्रवेश देख इसे रोकने का फैसला किया। उन्होंने अपनी इच्छा 'कॉन्ग्रेस वर्किंग कमेटी' को बताई और 12 फरवरी, 1922 को यह आंदोलन औपचारिक रूप से वापस ले लिया गया।

अन्य राष्ट्रीय नेताओं की प्रतिक्रिया:

असहयोग आंदोलन का नेतृत्व करने वाले जवाहरलाल नेहरू और अन्य नेता हैरान थे कि गांधीजी ने संघर्ष को उस समय रोक दिया जब नागरिक प्रतिरोध ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी स्थिति मज़बूत कर ली थी। मोतीलाल नेहरू और सी.आर. दास जैसे अन्य नेताओं ने गांधीजी के फैसले पर अपनी नाराज़गी व्यक्त की और स्वराज पार्टी की स्थापना का फैसला किया।

आंदोलन को वापस लेने का औचित्य:

गांधीजी ने अहिंसा में अपने अटूट विश्वास के आधार आंदोलन को वापस लिया जाना उचित ठहराया।बिपिन चंद्र जैसे इतिहासकारों ने तर्क दिया है कि अहिंसा की गांधीवादी रणनीति का उद्देश्य यह प्रदर्शित करना था कि अहिंसक प्रदर्शनकारियों के खिलाफ दमनकारी बल का उपयोग औपनिवेशिक राज्य के वास्तविक चरित्र को उजागर करेगा और अंततः उन पर नैतिक दबाव पड़ेगा, लेकिन चौरी चौरा जैसी

घटनाएँ इस रणनीति के विपरीत थीं। इसके अलावा बिपिन चंद्रा ने स्वीकार किया कि गांधीजी द्वारा आंदोलन को वापस लेना उनके "संघर्ष विराम संघर्ष" रणनीति का हिस्सा था।

तत्काल परिणाम:

असहयोग आंदोलन की वापसी ने कई युवा भारतीय राष्ट्रवादियों को इस निष्कर्ष पर पहुँचाया कि भारत अहिंसा के माध्यम से औपनिवेशिक शासन से मुक्त नहीं हो पाएगा। इन क्रांतिकारियों में जोगेश चटर्जी, रामप्रसाद बिस्मिल, सचिन सान्याल, अशफाकुल्ला खान, जतिन दास, भगत सिंह, भगवती चरण वोहरा, मास्टर सूर्य सेन आदि शामिल थे। असहयोग आंदोलन की अचानक समाप्ति से खिलाफत आंदोलन के नेताओं का कॉन्ग्रेस के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय आंदोलनों से मोहभंग हो गया, फलतः कॉन्ग्रेस और मुस्लिम नेताओं के बीच दरार पैदा हो गई।

शहीदों को समर्पित स्मारक

ब्रिटिश सरकार ने 1923 में मृत पुलिसकर्मियों को एक स्मारक समर्पित किया। स्वतंत्रता के बाद के स्मारक में क्रांतिकारी कवि राम प्रसाद बिस्मिल द्वारा 'जय हिंद' और कविता 'शहीदों की चिताओं पर लगेगे हर बरस मिले' को जोड़ा गया। 1971 में जिले के लोगों द्वारा 'चौरी चौरा शहीद स्मारक समिति' नामक एक संघ का गठन किया गया था। 1973 में चौरी चौरा में झील के पास एसोसिएशन द्वारा 12.2 मीटर ऊंची मीनार का निर्माण किया गया था। भारत सरकार ने ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा फांसी पर लटकाए गए शहीदों को सम्मानित करने के लिए एक शहीद स्मारक का निर्माण किया। जिन लोगों को फाँसी दी गई, उनके नाम उस पर खुदे हुए थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बारे में अधिक जानने के लिए स्मारक के पास एक पुस्तकालय और संग्रहालय भी स्थापित किया गया है।

उपसंहार

इस घटना ने भारत अहिंसा के माध्यम से औपनिवेशिक शासन से मुक्त नहीं हो पाएगा। इन क्रांतिकारियों में जोगेश चटर्जी, रामप्रसाद बिस्मिल, सचिन सान्याल, अशफाकुल्ला खान, जतिन दास, भगत सिंह, भगवती चरण वोहरा, मास्टर सूर्य सेन आदि शामिल थे। असहयोग आंदोलन की अचानक समाप्ति से खिलाफत आंदोलन के नेताओं का कॉन्ग्रेस के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय आंदोलनों से मोहभंग हो गया, फलतः कॉन्ग्रेस और मुस्लिम नेताओं के बीच दरार पैदा हो गई। लेकिन अब समय आ गया है कि इस ऐतिहासिक क्रांति को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर सबके समक्ष रखा जाए।

संदर्भ सूचि:

1ण अखिलेश मिश्र (लेखक) : 1857 अवध का मुक्ति संग्राम, वन्दना मिश्र (सम्पादक), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 1993,।

2ण आचार्य चतुर सेन : लौह पुरूष बापू, भारती भाषा प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 1998,।

3ण उर्मिला सब्बरवाल : हमारी आजादी की लड़ाई, दिल्ली, वर्ष 1965।

4ण चन्द्र शेखर पाठक : सन् 1857 का गदर या सिपाही विद्रोह का इतिहास, वर्ष 1922।

5ण डॉ0 शैलेन्द्र श्रीवास्तव : स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, साहित्य निधि प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 1994।

6ण डा0 एस0आर0 वर्मा : आधुनिक भारत का इतिहास (1740–1950ई0) एस0बी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाउस, आगरा, वर्ष 2004।

7ण डा0 वीरेन्द्र शर्मा : भारत के पुनर्निमाण में गाँधी जी का योगदान, श्री पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, वर्ष 1998।

8ण स्वतंत्रता सेनानी चिंतामणि शुक्ल : प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) में उत्तर प्रदेश का योगदान, उत्तर प्रदेश सूचना एवं जनसर्म्पक विभाग, वर्ष 1972।

9ण हरीश कुमार : गाँधी सामाजिक, राजनैतिक परिवर्तन अर्जुन पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, वर्ष 2006।

10ण श्री व्यवथित हृदय : स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी सेनानी, साममायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।